200
से ज्यादा प्रजातियां पक्षियों की और वनस्पतियों की विविधता यहां का आकर्षण और बढ़ाती है।

872.24
वर्ग किमी है कुल क्षेत्रफल बांदीपुर राष्ट्रीय उद्यान का

3000
रुपये प्रति व्यक्ति है जीप सफारी का किराया

स्लॉथ बियर

बांदीपुर राष्ट्रीय उद्यान पहुंचकर होता है 'जंगल बुक' जैसा एहसास

जंगल की गोद में बाघ और हाथियों की धरती पर अद्भुत सफर

इंडियन रॉक पायथन

सफारी, सन्नाटा और सरप्राइज जैसा
बांदीपुर का जादुई संसार

पश्चिमी घाट की सुरम्य पहाड़ियों में बसा बांदीपुर दक्षिण भारत के कर्नाटक राज्य में स्थित प्रकृति प्रेमियों और रोमांच चाहने वालों के लिए एक आदर्श पर्यटन स्थल है। हरे-भरे जंगलों, कल-कल करती नदियों और नीरवता बढ़ाते प्राकृतिक दृश्यों से घिरे इस सुरम्य व सुंदर रमणीक स्थल पर पहुंचकर आप आज की भागदौड़ भरी जिंदगी की कशमकश कुछ देर के लिए भूलकर यहीं के हो जाएंगे। यह देश का बाघ आरक्षित राष्ट्रीय उद्यान है। यहां बंगाल टाइगर, एशियाई हाथी, तेंदुआ और गौर जैसे जीवों तथा तमाम दुर्लभ पक्षियों के साथ अजगर, किंग कोबरा और मगरमच्छ पाए जाते हैं। बांदीपुर पहुंचने के लिए हमने अपनी यात्रा कार द्वारा मैसूर से शुरू की। करीब 82 किलोमीटर की यात्रा दो घंटे में पूरी करके हम बांदीपुर राष्ट्रीय उद्यान के गेट पर थे। बांदीपुर राष्ट्रीय उद्यान को देश के सबसे सुंदर और बेहतर प्रबंधित राष्ट्रीय उद्यानों में गिना जाता है। कर्नाटक में मैसूर-ऊटी राजमार्ग पर विशाल पश्चिमी घाट के सुरम्य परिवेश में स्थित यह नीलगिरि रिजर्व का महत्वपूर्ण हिस्सा है। इसके उत्तर-पश्चिम में कर्नाटक का राजीव गांधी राष्ट्रीय उद्यान (नागरहोल), दक्षिण में तमिलनाडु का मुदुमलाई वन्यजीव अभयारण्य और दक्षिण-पश्चिम में केरल का वायनाड वन्यजीव अभयारण्य है। बांदीपुर राष्ट्रीय उद्यान का कुल क्षेत्रफल 872.24 वर्ग किमी है। यह आंशिक रूप से चामराजनगर जिले के गुंडलुपेट तालुका और आंशिक रूप से मैसूर जिले के एचडीकोटे और नंजनगुड तालुका में आता है।

बाघों व हाथियों का यह प्रजनन स्थल, राजाओं का था शिकारगाह

- कभी यह उद्यान राजा-महाराजाओं का शिकारगाह था। बाद में आसपास के आरक्षित वन क्षेत्रों को इसमें शामिल कर दिया गया और इसका नाम बांदीपुर राष्ट्रीय उद्यान रखा गया। यह राष्ट्रीय उद्यान बाघों और हाथियों का प्रजनन स्थल था, इसलिए इन्हें बचाने के लिए इस अभयारण्य को देश भर के 30 अभयारण्यों में चिह्नित किया गया। बांदीपुर राष्ट्रीय उद्यान बाघ, हाथी, भालू और भारतीय गौर जैसे अनोखे और तमाम लुप्तप्राय वन्यजीव प्रजातियों का घर है। यह प्रकृति प्रेमियों के लिए स्वर्ग है। नीलगिरी की तलहटी में बसे बांदीपुर का बाघों से पुराना नाता है। यह लुप्तप्राय एशियाई जंगली हाथियों का अंतिम आश्रय स्थल है। इस राष्ट्रीय उद्यान में स्लॉथ बियर, गौर, भारतीय रॉक अजगर, सियार, मगर और चार सींग वाले मृग जैसी कई अन्य लुप्तप्राय प्रजातियां देखने को मिलती हैं। यहां सांभर, चूहा हिरण, चीतल, सुस्त भालू और उड़ने वाली दुर्लभ छिपकली भी पाई जाती है। पक्षियों की 200 से ज्यादा प्रजातियां और वनस्पतियों की विविधता यहां का आकर्षण और बढ़ाती है। बांदीपुर में सागौन, शीशम, चंदन, भारतीय लॉरेल और कीनो के पेड़, गुच्छेदार बांस सहित इमारती लकड़ियों के पेड़ भी हैं।

नीली आंखों वाला तेंदुआ

अविश्वसनीय! सावधान! यहां मिलते अलग-अलग रंग की आंखों वाले तेंदुए

इस तेंदुए की आंखें आपको सम्मोहित कर देंगी। बांदीपुर टाइगर रिजर्व में भारत में अपनी तरह के पहले दो अलग-अलग रंग की आंखों वाले तेंदुए भी हैं। एक आंख नीली-हरी तो दूसरी भूरी। यह एक जेनेटिक विशेषता हेटेरोक्रोमिया है, जिसके कारण तेंदुए की दोनों आंखों का रंग अलग-अलग होता है।

प्रकृति की अद्भुत दुनिया में वन्य जीवों के घर देखने को सफारी

- उद्यान के द्वार से भीतर प्रवेश करते ही हमें घने जंगलों, लुढ़कती पहाड़ियों और विशाल घास के मैदानों के साथ एक अद्भुत दुनिया के दर्शन हुए। पक्षियों की चहचहाहट, बंदरों की खों-खों और पत्तों की सरसराहट से प्राकृतिक वन्य जीवन जीवंत हो उठा। जंगली फूलों की खुशबू हवा के साथ बहकर स्वर्ग जैसा अहसास दिला रही थी। बांदीपुर राष्ट्रीय उद्यान वनस्पतियों और जीवों की एक समृद्ध विविधता का घर है, जिसमें बाघ, हाथी, तेंदुए, हिरण, जंगली सूअर और पक्षियों की कई प्रजातियां शामिल हैं।
- यहां के जीवों को उनके प्राकृतिक आवास में देखने के लिए उद्यान में सफारी की सुविधा उपलब्ध है। हमने वन विभाग द्वारा संचालित मिनी-बस सफारी की यात्रा रेंज कार्यालय से शुरू की। यहां से बस सफारी सुबह 6.15 से 9 बजे और दोपहर 2.15 से शाम 5 बजे के बीच चलती है। शुल्क 350 रुपये प्रति व्यक्ति है। जीप सफारी का किराया तीन हजार रुपये प्रति व्यक्ति है। जीप सफारी सुबह 6.15 से 8 बजे, सुबह 8 से 9.45 बजे, दोपहर 2.30 से 4.30 बजे और शाम 4.30 से 6.30 बजे के बीच संचालित होती है। पूर्व में चलने वाली हाथी सफारी अब यहां बंद की जा चुकी है। जीप और मिनी बस सफारी का समय भी मौसम और सुरक्षा कारणों से बदलता रहता है।

आदिवासी गांवों की परंपराएं और रीति-रिवाजों को नजदीक से देखें

प्राकृतिक सुंदरता के अलावा, बांदीपुर राष्ट्रीय उद्यान अपनी सांस्कृतिक विरासत के लिए भी जाना जाता है। यह उद्यान कई आदिवासी गांवों से घिरा हुआ है। हर एक गांव की अपनी अनूठी परंपराएं और रीति-रिवाज हैं। आपको इन गांवों में घूमते समय ऐसा लगेगा जैसे एक या दो शताब्दी पीछे चले गए हैं। आदिवासी गांवों का भ्रमण समृद्ध सांस्कृतिक विरासत का अनुभव दिलाता है। यहां लोगों की जीवन शैली बहुत करीब से देखी जा सकती है। हालांकि समय की कमी से हम इस अनूठे अवसर को बहुत थोड़े समय के लिए कार से ही देख पाए। लेकिन बांदीपुर घूमने के दौरान आसपास के आदिवासी गांवों में लोगों के रीति-रिवाजों और परंपराओं के बारे में जरूर काफी जानकारी हासिल की।

लेखक - शिव कुमार अवस्थी, ब्रह्मावर्त, कानपुर
उप वन संरक्षक (सेवानिवृत्त)

200 रुपये मूल्य वर्ग के नोट पर कहानी सांची स्तूप की
रुपया बताता नीचे संसार ऊपर मोक्ष

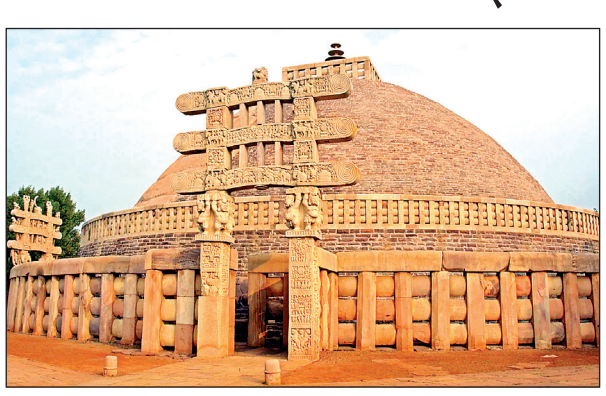

भारतीय रिजर्व बैंक ने 25 अगस्त, 2017 को महात्मा गांधी नई श्रृंखला में रुपये 200 मूल्य वर्ग का नोट जारी किया था। यह नोट अपने पृष्ठ भाग में सांची के स्तूप की कहानी सुनाता है। सांची स्तूप मध्य प्रदेश में स्थित है। यह स्थान भोपाल से लगभग 40 किमी दूर एक पहाड़ी पर है। सांची स्थल में बौद्ध स्मारकों (एकाश्म स्तंभ, महल, मंदिर और मठ) का एक समूह है। इनमें से अधिकांश दूसरी और पहली शताब्दी ईसा पूर्व के हैं। यह सबसे पुराना बौद्ध अभयारण्य है और 12वीं शताब्दी ईस्वी तक भारत में एक प्रमुख बौद्ध केंद्र था। सांची के स्तूप, मंदिर, विहार और स्तंभ, प्राचीनतम और सबसे परिपक्व, प्राचीन कलाओं और स्वतंत्र वास्तुकला के उदाहरण हैं, जो तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व से बारहवीं शताब्दी ईस्वी तक बौद्ध धर्म के इतिहास का विस्तृत दस्तावेजीकरण करते हैं। सांची स्तूप बुद्ध की निर्माण अवस्था मोक्ष को दर्शाता है। इसका ऊपर की ओर गोलाकार गुम्बद मोक्ष और नीचे की चौड़ी आधारशिला भौतिक संसार को दिखाती है।

- **सम्राट अशोक के पुत्र से जुड़ा पवित्र स्थान :** शांत और मनोरम वनीय पठार पर स्थित सांची के बौद्ध स्मारकों को श्रीलंकाई बौद्ध इतिहास में पवित्र चेतियागिरि भी माना जाता है। यहां सम्राट अशोक के पुत्र महेंद्र, श्रीलंका की अपनी धर्मप्रचारक यात्रा शुरू करने से पहले रुके थे। सांची में स्थापित सारिपुत्र और मौद्गल्यायन (बुद्ध के प्रमुख शिष्य) के अवशेषों की थेरवादियों द्वारा पूजा की जाती थी और आज भी उनका सम्मान किया जाता है।
- **शुंग और सातवाहन वंश ने अंलकृत किए स्तंभ व स्तूप :** सांची के एक पवित्र केंद्र के रूप में आरंभ का श्रेय मौर्य सम्राट अशोक को है। अत्यधिक विस्तृत शीर्ष वाले अखंड अशोक स्तम्भ की स्थापना के साथ, सम्राट अशोक ने सांची को एक अत्यंत महत्वपूर्ण स्थल के रूप में प्रतिष्ठित किया। स्तम्भ के समकालीन एक ईंट का स्तूप था, जिसका आकार बाद में शुंग वंश के दौरान बढ़ाया गया, पत्थर की परत से ढका गया और अलंकृत कठघरा, हर्मिका, यष्टि, छत्र और चार तोरण युक्त प्रदक्षिणा पथों और सीढ़ियों से संवर्धित किया गया, जिन्हें बाद में पहली शताब्दी ईस्वी में सातवाहन वंश के दौरान अलंकृत किया गया।

– अजय त्रिवेदी, उप निदेशक युवा कल्याण विभाग।

घरों में हरियाली का तरीका वर्टिकल गार्डनिंग

शहरों में खासकर अपार्टमेंट में रहने वाले लोगों के पास बागवानी के लिए जगह नहीं होती है। लेकिन अपना खुद का बगीचा उगाना एक ऐसा सपना होता है, जिसे अधिकतर लोग कभी छोड़ना नहीं चाहते हैं। ऐसे में वर्टिकल गार्डन हमेशा से उन सभी लोगों के लिए आकर्षण का बड़ा केंद्र रहे हैं, जिन्होंने इन्हें देखा है। बेबीलोन के बगीचों से शुरू हुए वर्टिकल गार्डन के विचार का इस्तेमाल जगह बचाने और सुंदर दिखने वाले स्थान बनाने के लिए किया गया था, लेकिन आज, इस बागवानी तकनीक का दुनिया भर में इस्तेमाल किया जा रहा है।

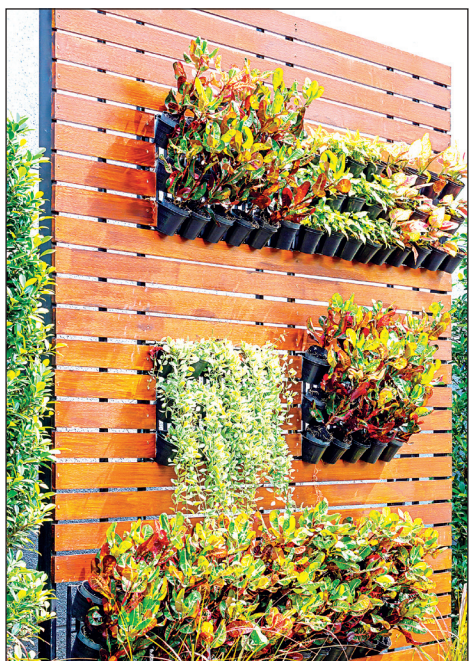

पौधों को दीवार, छत, पिलर या बालकनी में उगाने की विधि

वर्टिकल गार्डनिंग पौधों को ऊपर की ओर उगाने की एक विधि है, जिसमें अक्सर दीवारों, जालीदार ढांचों या विशेष रूप से डिजाइन किए गए गमलों जैसी संरचनाओं का उपयोग किया जाता है। यह तरीका छोटी जगह का अधिकतम उपयोग करता है, जिससे यह छोटे क्षेत्रों या शहरी परिवेश के लिए आदर्श बन जाता है। ज्यादातर फ्लैटों या छोटे घरों के अंदर वर्टिकल गार्डनिंग आज एक चलन के रूप में स्थापित हो गई है। यह एक ऐसी तकनीक है जिसमें पौधों को वर्टिकल जगह पर जैसे दीवार, छत, पिलर या बालकनी की रेलिंग आदि पर उगाया जाता है। वास्तव में यह बागबानी का अर्बन तरीका है, जिसमें कम जगह में ज्यादा पौधे उगाए जाने की कोशिश की जाती है। लटकते पौधों के साथ-साथ गमलों में लगे पौधों से भी वर्टिकल गार्डनिंग की जा सकती है। घर के अंदर और बाहर होने वाली वर्टिकल गार्डनिंग को ग्रीन वॉल भी कहा जाता है। शहरों में हरियाली और पर्यावरण संरक्षण के लिए ग्रीन वॉल कई शहरों में पुलों के नीचे, महत्वपूर्ण स्थलों पर देखी जा सकती है।

- **सबसे पहले उचित स्थान चुनें :** वर्टिकल गार्डनिंग के लिए पर्याप्त रोशनी वाली एक अच्छी जगह चुनना बेहद जरूरी है। यह देखें कि कौन से पौधे किस स्थान के लिए उपयुक्त होंगे और उन्हें लगाने के लिए दीवार, छत या बॉलकनी कितनी मजबूत है। पौधे चाहे किसी भी किस्म के चुने गए हों, इनडोर वर्टिकल गार्डनिंग की बदौलत हवा की गुणवत्ता और ड्राइंग रूम या कमरे के वातावरण में सुधार किया जा सकता है। इसके साथ ही यह भी महत्वपूर्ण तथ्य है कि पौधे अलग-अलग ध्वनि अवरोधक के रूप में भी काम कर सकते हैं।
- **पौधों का चयन और पानी देने की व्यवस्था महत्वपूर्ण :** घर के अंदर पौधों की अच्छी वृद्धि के लिए पौधों को पर्याप्त पानी देना जरूरी है। इसके लिए कई तरह की सिंचाई प्रणालियां उपलब्ध हैं। वर्टिकल गार्डनिंग में यह सुनिश्चित करना जरूरी है कि पौधे उगाने के लिए इस्तेमाल किए जाने वाले बर्तन जलरोधी हों। पहले दीवार पर एक वाटरप्रूफ इंसुलेशन परत लगाना भी बेहतर विकल्प है। इससे दीवार पर नमी या फफूंदी लगने से बच सकते हैं।

बालकनी के लिए करें व्यापक तैयारी

- बालकनी पर वर्टिकल गार्डनिंग की योजना बनाते समय, व्यापक तैयारी जरूरी है। बालकनी में प्रकाश की स्थिति पर विचार करना और उसके अनुसार पौधों का चयन करना महत्वपूर्ण है। बालकनी पर ऊर्ध्वाधर बागवानी के लिए जड़ी-बूटियां और सब्जियां, दोनों ही बेहतरीन विकल्प हैं। गर्मियों में अपनी उपज खुद इकट्ठा करने का आनंद अद्भुत हो सकता है। उदाहरण के लिए जुकनी और टमाटर धूप वाली जगह पर खूब फलते-फूलते हैं। फूल वाले पौधे बालकनी में रंग भर देते हैं। बालकनी पर ऊर्ध्वाधर बागवानी के लिए लोकप्रिय फूल वाले पौधों में चढ़ने वाले नास्टर्टियम शामिल हैं, जो खाने योग्य भी होते हैं। इसके साथ ही ट्रेलिंग पेटुनिया, जेरेनियम और मैंडेविला भी हैं। बालकनी पर बारहमासी फूल वाले पौधों के लिए, बौना झाड़ू या शीतकालीन चमेली अच्छे विकल्प हैं। खिलती हुई बालकनी का लंबे समय तक आनंद सुनिश्चित करने के लिए उच्च गुणवत्ता वाले उर्वरकों जैसे उर्वरकों और पोषक तत्वों के मिश्रण का उपयोग करना बेहतर रहेगा।

फीचर डेस्क, कानपुर